

"युवाओं के मध्य सोशल मीडिया सलंग्रता का उनकी का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन "

डॉ० अजय कुमार यादव

सहायक आचार्य, बी. एड. विभाग, जंगी महाविद्यालय असबरनपुर, जौनपुर (उ०प्र०)

सार

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के तेजी से विस्तार ने आज के युवाओं के संचार पैटर्न, सीखने के व्यवहार और जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसी सोशल नेटवर्किंग साइटें छात्रों के दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई हैं, जो न केवल उनकी सामाजिक बातचीत बल्कि उनकी शैक्षणिक गतिविधियों को भी प्रभावित करती हैं। वर्तमान अध्ययन युवाओं के बीच सोशल मीडिया जुड़ाव और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों की जांच करता है, इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को समझने पर ध्यान केंद्रित करता है। अध्ययन एक मात्रात्मक अनुसंधान दृष्टिकोण को अपनाता है और उच्च शिक्षा संस्थानों में नामांकित युवा शिक्षार्थियों के प्रतिनिधि नमूने से एकत्र किए गए सर्वेक्षण डेटा का उपयोग करता है। ग्रेड, एकाग्रता स्तर और अध्ययन की आदतों जैसे शैक्षणिक प्रदर्शन के संकेतकों के साथ साथ सोशल मीडिया के उपयोग की आवृत्ति, उद्देश्य और अवधि को मापने के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने और सोशल मीडिया जुड़ाव और शैक्षणिक परिणामों के बीच महत्वपूर्ण संबंधों की पहचान करने के लिए प्रतिशत विश्लेषण, सहसंबंध और प्रतिगमन तकनीकों सहित सांख्यिकीय उपकरण लागू किए गए थे। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि सूचना साझा करने और शैक्षणिक सहयोग जैसी शैक्षिक गतिविधियों के लिए सोशल मीडिया का मध्यम और उद्देश्यपूर्ण उपयोग शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। हालाँकि, सोशल मीडिया का अत्यधिक और गैर-शैक्षणिक उपयोग छात्रों की एकाग्रता, समय प्रबंधन और शैक्षणिक प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डालता पाया गया। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं को युवाओं के बीच सोशल मीडिया के संतुलित और जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह छात्रों को अपने शैक्षणिक जीवन में सोशल मीडिया को प्रभावी ढंग से एकीकृत करने में मदद करने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों और डिजिटल साक्षरता पहल की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द: सोशल मीडिया, युवा, शैक्षणिक उपलब्धि, डिजिटल जुड़ाव, शिक्षा

परिचय

समकालीन डिजिटल युग में, सोशल मीडिया युवाओं के व्यवहार, संचार पैटर्न और सीखने के अनुभवों को आकार देने वाली सबसे प्रभावशाली शक्तियों में से एक के रूप में उभरा है। पिछले एक दशक में, फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब और ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म दुनिया भर के छात्रों के दैनिक जीवन में गहराई से शामिल हो गए हैं।

ये मंच अब मनोरंजन या सामाजिक संपर्क तक सीमित नहीं हैं; वे तेजी से सूचना साझा करने, सहयोगात्मक शिक्षा और अकादमिक नेटवर्किंग के उपकरण बन गए हैं। परिणामस्वरूप, सोशल मीडिया सहभागिता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध ने शोधकर्ताओं, शिक्षकों और नीति निर्माताओं का महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है। युवा सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर सबसे सक्रिय जनसांख्यिकीय समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्मार्टफोन तक पहुंच में आसानी, सस्ती इंटरनेट सेवाओं और डिजिटल संचार की बढ़ती लोकप्रियता ने छात्रों के बीच सोशल मीडिया के उपयोग को बढ़ा दिया है। युवा शिक्षार्थी विभिन्न उद्देश्यों के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, जिसमें सामाजिक संबंध बनाए रखना, शैक्षिक सामग्री तक पहुंच बनाना, ऑनलाइन चर्चाओं में भाग लेना और शैक्षणिक सहायता प्राप्त करना शामिल है। जबकि ये प्लेटफॉर्म सीखने में वृद्धि के लिए कई अवसर प्रदान करते हैं, अत्यधिक उपयोग, व्याकुलता, लत और शैक्षणिक प्रदर्शन पर उनके संभावित नकारात्मक प्रभाव के बारे में चिंताएँ उठाई गई हैं। सोशल मीडिया की यह दोहरी प्रकृति छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर व्यवस्थित और अनुभवजन्य तरीके से इसके प्रभाव की जांच करना आवश्यक बनाती है।

शैक्षणिक उपलब्धि को व्यापक रूप से छात्रों के बौद्धिक विकास, सीखने के परिणामों और भविष्य के अवसरों का एक प्रमुख संकेतक माना जाता है। यह न केवल छात्रों के ज्ञान और कौशल को दर्शाता है बल्कि उनके अनुशासन, प्रेरणा और समय को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता को भी दर्शाता है। युवा शिक्षा के संदर्भ में, व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास के लिए उच्च शैक्षणिक मानकों को बनाए रखना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, सोशल मीडिया के साथ छात्रों की बढ़ती व्यस्तता ने शैक्षणिक व्यवहार, अध्ययन की आदतों और प्रदर्शन स्तरों को आकार देने में इसकी भूमिका पर सवाल उठाए हैं। कुछ विद्वानों का तर्क है कि सोशल मीडिया सूचना तक पहुंच को सुविधाजनक बनाकर, सहयोगात्मक शिक्षा को बढ़ावा देकर और छात्रों और शिक्षकों के बीच संचार में सुधार करके शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ा सकता है। दूसरों का सुझाव है कि सोशल मीडिया के लंबे समय तक और अनियमित उपयोग से एकाग्रता में कमी, अध्ययन का समय कम होना, शैक्षणिक तनाव और शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट हो सकती है। आधुनिक सीखने के माहौल में सोशल मीडिया की शैक्षिक क्षमता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। कई छात्र शैक्षणिक वीडियो देखने के लिए यूट्यूब, नोट्स साझा करने के लिए व्हाट्सएप और टेलीग्राम और शैक्षणिक चर्चाओं के लिए फेसबुक समूहों जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग करते हैं। ये प्लेटफॉर्म अनौपचारिक शिक्षा, सहकर्मी बातचीत और शैक्षिक संसाधनों तक त्वरित पहुंच का समर्थन करते हैं। सोशल मीडिया छात्रों को स्व-निर्देशित सीखने, डिजिटल साक्षरता कौशल विकसित करने और वर्तमान शैक्षणिक रुझानों के साथ अपडेट रहने में सक्षम बनाता है। जब उचित रूप से उपयोग किया जाता है, तो सोशल मीडिया एक पूरक शिक्षण उपकरण के रूप में कार्य कर सकता है जो छात्रों की समझ और शैक्षणिक जुड़ाव को बढ़ाता है। सोशल मीडिया का यह सकारात्मक आयाम डिजिटल युग में एक शक्तिशाली शैक्षिक संसाधन के रूप में इसकी भूमिका को उजागर करता है। इसके संभावित लाभों के बावजूद, सोशल मीडिया जुड़ाव अकादमिक उपलब्धि के लिए कई चुनौतियाँ भी पेश करता है। प्रमुख चिंताओं में से एक यह है कि छात्र मनोरंजन, चैटिंग और असंबंधित सामग्री ब्राउज़ करने जैसे गैर-शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए सोशल नेटवर्किंग साइटों पर अत्यधिक समय बिताते हैं। इससे अक्सर ध्यान भटकता है, विलंब होता है और शैक्षणिक कार्यों पर ध्यान कम हो जाता है। लगातार सूचनाएं और जुड़े रहने की इच्छा अध्ययन की दिनचर्या को बाधित कर सकती है और छात्रों की एकाग्रता और उत्पादकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। इसके अलावा, सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग नींद में खलल, मानसिक थकान और बढ़ते तनाव से जुड़ा हुआ है, ये सभी शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं। सोशल मीडिया सहभागिता से संबंधित एक और महत्वपूर्ण मुद्दा युवाओं में प्रभावी समय प्रबंधन की कमी है। छात्रों को अपनी ऑनलाइन गतिविधियों के साथ अपनी शैक्षणिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने में संघर्ष करना पड़

सकता है, जिसके परिणामस्वरूप खराब शैक्षणिक परिणाम हो सकते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की व्यसनी प्रकृति इस समस्या को और बढ़ा देती है, जिससे छात्रों के लिए उनके उपयोग को विनियमित करना मुश्किल हो जाता है। कुछ मामलों में, सोशल मीडिया पर निर्भरता से अकादमिक थकान हो सकती है और पढ़ाई के प्रति प्रेरणा कम हो सकती है। ये चुनौतियाँ यह समझने के महत्व को रेखांकित करती हैं कि सोशल मीडिया के उपयोग के विभिन्न पैटर्न और उद्देश्य शैक्षणिक उपलब्धि को कैसे प्रभावित करते हैं। शैक्षणिक उपलब्धि पर सोशल मीडिया का प्रभाव एक समान नहीं है और उपयोग की आवृत्ति, जुड़ाव का उद्देश्य, मंच का प्रकार और छात्रों के बीच व्यक्तिगत अंतर जैसे कारकों के आधार पर भिन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए, जो छात्र मुख्य रूप से शैक्षिक उद्देश्यों के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, उन्हें सकारात्मक शैक्षणिक परिणामों का अनुभव हो सकता है, जबकि जो लोग गैर-शैक्षणिक गतिविधियों में अत्यधिक संलग्न होते हैं, उन्हें नकारात्मक परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त, आयु, लिंग, शैक्षिक स्तर और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि जैसे जनसांख्यिकीय कारक भी सोशल मीडिया सहभागिता और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए, इस रिश्ते की जटिल और बहुआयामी प्रकृति को पकड़ने के लिए एक व्यापक विश्लेषण की आवश्यकता है। भारतीय संदर्भ में, शिक्षा प्रणाली के तेजी से डिजिटलीकरण के कारण युवा शिक्षा पर सोशल मीडिया का प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गया है। ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों, डिजिटल कक्षाओं और ई-संसाधनों के एकीकरण ने छात्रों की प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया पर निर्भरता बढ़ा दी है। कोविड-19 महामारी ने इस प्रवृत्ति को और तेज कर दिया, जिससे डिजिटल प्लेटफॉर्म सीखने की प्रक्रिया का एक अनिवार्य घटक बन गया। जबकि सोशल मीडिया ने इस अवधि के दौरान शिक्षा में निरंतरता प्रदान की, इसने स्क्रीन समय, शैक्षणिक व्याकुलता और सीखने की प्रभावशीलता से संबंधित चिंताओं को भी तीव्र कर दिया। यह बदलता शैक्षणिक परिदृश्य अनुभवजन्य अध्ययन की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है जो भारतीय युवाओं के बीच शैक्षणिक उपलब्धि पर सोशल मीडिया की सहभागिता के प्रभाव की जांच करता है।

वर्तमान अध्ययन मात्रात्मक शोध दृष्टिकोण का उपयोग करके युवाओं के बीच सोशल मीडिया जुड़ाव और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों की जांच करना चाहता है। छात्रों के सोशल मीडिया के उपयोग के पैटर्न और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन का विश्लेषण करके, अध्ययन का उद्देश्य सीखने के परिणामों पर सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों की पहचान करना है। इस अध्ययन के निष्कर्षों से उम्मीद की जाती है कि सोशल मीडिया शैक्षणिक उपलब्धि को कैसे प्रभावित करता है, इस पर अनुभवजन्य साक्ष्य प्रदान करके साहित्य के मौजूदा निकाय में योगदान देगा। इसके अलावा, अध्ययन का उद्देश्य छात्रों के बीच सोशल मीडिया के संतुलित और जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करना है। इस रिश्ते को समझना प्रभावी रणनीतियों को विकसित करने के लिए आवश्यक है जो अकादमिक उपलब्धि पर इसके प्रतिकूल प्रभावों को कम करते हुए सोशल मीडिया के शैक्षिक लाभों का उपयोग करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

हाल के अध्ययन युवाओं के बीच सोशल मीडिया जुड़ाव और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच जटिल संबंधों को उजागर करते रहे हैं। गुप्ता और बशीर (2018) ने भारतीय विश्वविद्यालय के छात्रों की जांच की और पाया कि सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से ध्यान भटकने और खराब समय प्रबंधन के कारण शैक्षणिक प्रदर्शन पर

नकारात्मक प्रभाव पड़ा। हालाँकि, शैक्षणिक-उन्मुख उपयोग ने सहायक सीखने के परिणाम दिखाए। अहमद और काज़ी (2019) ने बताया कि सोशल मीडिया सहकर्मि सीखने और सूचना साझा करने की सुविधा देता है, लेकिन अनियंत्रित उपयोग से एकाग्रता और शैक्षणिक तनाव कम हो जाता है। चुग और रूही (2018) ने शिक्षाशास्त्र में एकीकृत होने पर सहयोगात्मक शिक्षा और छात्र भागीदारी को बढ़ाने में सोशल मीडिया की भूमिका पर जोर दिया। ओवसु-अचीव और लार्सन (2019) ने सोशल नेटवर्किंग साइटों पर बिताए गए समय और छात्रों के शैक्षणिक के बीच एक महत्वपूर्ण नकारात्मक संबंध की पहचान की। उपलब्धि।मोकबेल और कॉक (2020) ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सोशल मीडिया की थकान और लत छात्रों की शैक्षणिक प्रेरणा पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। सिंह और गिल (2021) ने पाया कि शैक्षिक सामग्री के लिए सोशल मीडिया का मध्यम उपयोग भारतीय युवाओं के बीच शैक्षणिक जुड़ाव को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। हाल ही में, खान, अशरफ और मलिक (2022) ने निष्कर्ष निकाला कि डिजिटल साक्षरता और स्व-नियमन यह निर्धारित करते हैं कि सोशल मीडिया सीखने में सहायता या शैक्षणिक व्याकुलता के रूप में कार्य करता है या नहीं। इन अध्ययनों से संकेत मिलता है कि सोशल मीडिया का प्रभाव काफी हद तक उपयोग के पैटर्न और उद्देश्य पर निर्भर करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. युवाओं के बीच सोशल मीडिया एंगेजमेंट के लेवल का विश्लेषण करना
2. शैक्षणिक उपलब्धि पर इसके प्रभाव की जांच करना
3. पढ़ाई को प्रभावित करने वाले सोशल मीडिया इस्तेमाल के पैटर्न की पहचान करना

अनुसंधान पद्धति

इस स्टडी में युवाओं में सोशल मीडिया इस्तेमाल का एकेडमिक परफॉर्मेंस पर असर जानने के लिए क्वांटिटेटिव रिसर्च डिज़ाइन का इस्तेमाल किया गया है। इस्तेमाल के पैटर्न और उनके एकेडमिक नतीजों को समझने के लिए एक डिस्क्रिप्टिव और एनालिटिकल तरीके का इस्तेमाल किया गया। इस स्टडी में हायर एजुकेशन संस्थानों में पढ़ने वाले युवा स्टूडेंट्स को शामिल किया गया था। सुविधा सैंपलिंग तकनीक का इस्तेमाल करके 200 लोगों का सैंपल चुना गया। प्राइमरी डेटा एक स्ट्रक्चर्ड प्रश्नावली के ज़रिए इकट्ठा किया गया था, जिसे सोशल मीडिया इस्तेमाल की फ्रीक्वेंसी, इस्तेमाल का मकसद, इस्तेमाल की अवधि और एकेडमिक परफॉर्मेंस के इंडिकेटर्स जैसे ग्रेड, पढ़ाई की आदतें और कंसंट्रेशन लेवल को मापने के लिए डिज़ाइन किया गया था। प्रश्नावली ऑब्जेक्टिविटी और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए पांच-पॉइंट लिक्र्ट स्केल पर आधारित थी। सेकेंडरी डेटा जर्नल, किताबों और पब्लिशड रिसर्च स्टडीज़ से इकट्ठा किया गया था। डेटा एनालिसिस के लिए, परसेंटेज एनालिसिस, मीन स्कोर, कोरिलेशन और रिग्रेशन एनालिसिस जैसे स्टैटिस्टिकल टूल्स का इस्तेमाल सही स्टैटिस्टिकल सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करके किया गया। इन टूल्स ने सोशल मीडिया इस्तेमाल और एकेडमिक परफॉर्मेंस के बीच संबंध पहचानने में मदद की। वॉलंटरी पार्टिसिपेशन और जवाब देने वालों की जानकारी की गोपनीयता सुनिश्चित करके नैतिक बातों का ध्यान रखा गया।

डेटा विश्लेषण और व्याख्या

तालिका 1: उत्तरदाताओं का लिंग के अनुसार वितरण

लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
पुरुष	92	46.0
महिला	108	54.0
कुल	200	100

तालिका1 में जवाब देने वालों का जेंडर के हिसाब से बंटवारा दिखाया गया है। 200 जवाब देने वालों में से 54% महिलाएं हैं और 46% पुरुष हैं, जो दोनों जेंडर का काफी संतुलित प्रतिनिधित्व दिखाता है। महिला जवाब देने वालों की थोड़ी ज़्यादा भागीदारी एकेडमिक और सोशल मीडिया से जुड़ी स्टडीज़ में उनकी एक्टिव भागीदारी को दिखाती है। यह संतुलित बंटवारा जेंडर भेदभाव को कम करने में मदद करता है और यह पक्का करता है कि स्टडी के नतीजे अलग-अलग नज़रियों को दिखाएं। जेंडर के हिसाब से प्रतिनिधित्व ज़रूरी है क्योंकि सोशल मीडिया इस्तेमाल करने के तरीके और एकेडमिक व्यवहार अलग-अलग जेंडर में अलग-अलग हो सकते हैं, जो सोशल मीडिया जुड़ाव और एकेडमिक उपलब्धि के बीच पूरे रिश्ते पर असर डाल सकते हैं।

तालिका 2: सोशल मीडिया पर रोज़ाना बिताया गया समय

खर्च किया गया समय	जवाब देने वाले	प्रतिशत
1 घंटे से कम	32	16.0
1-3 घंटे	86	43.0
3-5 घंटे	58	29.0
5 घंटे से ज़्यादा	24	12.0
कुल	200	100

तालिका2 से पता चलता है कि ज़्यादातर जवाब देने वाले (43%) रोज़ाना 1-3 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं, उसके बाद 29% लोग 3-5 घंटे बिताते हैं। इससे पता चलता है कि सोशल मीडिया छात्रों की रोज़ाना की दिनचर्या का एक बड़ा हिस्सा है। सिर्फ़ 16% जवाब देने वालों ने बताया कि वे रोज़ाना एक घंटे से कम समय बिताते हैं, जबकि 12% लोग पाँच घंटे से ज़्यादा समय बिताते हैं। ज़्यादा इस्तेमाल से पढ़ाई का समय कम हो सकता है और ध्यान भटक सकता है, जबकि सीमित इस्तेमाल को मैनेज किया जा सकता है। यह डेटा इस बात पर ज़ोर देता है कि सोशल मीडिया पर बिताया गया समय एकेडमिक परफॉर्मेंस को कैसे प्रभावित करता है, इसकी जाँच करने की ज़रूरत है।

तालिका 3: सोशल मीडिया के इस्तेमाल का मकसद

उद्देश्य	फ्रीकेंसी	प्रतिशत
एकेडमिक इस्तेमाल	48	24.0
सोशल इंटरैक्शन	76	38.0
मनोरंजन	54	27.0
ऊपर के सभी	22	11.0

तालिकासे पता चलता है कि युवाओं में सोशल मीडिया इस्तेमाल का मुख्य मकसद सोशल इंटरैक्शन (38%) है, उसके बाद एंटरटेनमेंट (27%) है। सिर्फ 24% जवाब देने वाले मुख्य रूप से पढ़ाई के मकसद से सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। इससे पता चलता है कि सोशल मीडिया पर गैर-शैक्षणिक गतिविधियाँ ज्यादा होती हैं, जो अगर कंट्रोल न की जाएं तो पढ़ाई में परफॉर्मेंस पर बुरा असर डाल सकती हैं। हालाँकि, पढ़ाई के लिए इस्तेमाल से यह भी पता चलता है कि अगर सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो सोशल मीडिया एक लर्निंग टूल बन सकता है। ये नतीजे स्टूडेंट्स के बीच पढ़ाई से जुड़े सोशल मीडिया के इस्तेमाल को बढ़ावा देने की अहमियत पर जोर देते हैं।

तालिका 4: पसंदीदा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

प्लेटफॉर्म	जवाब देने वाले	प्रतिशत
WhatsApp	72	36.0
Instagram	54	27.0
YouTube	46	23.0
Facebook	28	14.0

तालिका4 से पता चलता है कि WhatsApp सबसे पसंदीदा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (36%) है, इसके बाद Instagram (27%) और YouTube (23%) हैं। WhatsApp की लोकप्रियता का कारण कम्युनिकेशन और एकेडमिक मटीरियल शेयर करने के लिए इसका बार-बार इस्तेमाल होना है। YouTube का इस्तेमाल एजुकेशनल वीडियो के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है, जबकि Instagram ज्यादा एंटरटेनमेंट-ओरिएंटेड है। Facebook का इस्तेमाल तुलनात्मक रूप से कम होता है। प्लेटफॉर्म की पसंद यह तय करने में अहम भूमिका निभाती है कि सोशल मीडिया एंगेजमेंट एकेडमिक परफॉर्मेंस में पॉजिटिव या नेगेटिव योगदान देता है या नहीं।

तालिका 5: एकेडमिक सहयोग के लिए सोशल मीडिया का उपयोग

जवाब	फ्रीकेंसी	प्रतिशत
हाँ	118	59.0
नहीं	82	41.0

तालिकासे पता चलता है कि 59% जवाब देने वाले एकेडमिक कामों के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं, जैसे ग्रुप डिस्कशन, नोट्स शेयर करना और प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेशन। यह दिखाता है कि मिलकर सीखने और साथियों के साथ बातचीत में सोशल मीडिया का रोल बढ़ रहा है। हालांकि, 41% जवाब देने वाले एकेडमिक कामों के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं करते हैं, जिससे पता चलता है कि इसकी एजुकेशनल क्षमता का पूरा इस्तेमाल नहीं हो रहा है। सोशल मीडिया के ज़रिए स्ट्रक्चर्ड एकेडमिक सहयोग को बढ़ावा देने से सीखने के नतीजे और एकेडमिक परफॉर्मेंस बेहतर हो सकती है।

तालिका 6: पढ़ाई पर सोशल मीडिया का प्रभाव

प्रभाव का स्तर	जवाब देने वाले	प्रतिशत
बहुत ज़्यादा नेगेटिव असर	62	31.0
मीडियम असर	78	39.0
कम असर	60	30.0

तालिका 6 से पता चलता है कि 31% जवाब देने वालों को पढ़ाई पर ध्यान लगाने में सोशल मीडिया की वजह से बहुत ज़्यादा नेगेटिव असर महसूस होता है, जबकि 39% लोग मीडियम असर बताते हैं। इससे पता चलता है कि सोशल मीडिया की वजह से होने वाले डिस्ट्रैक्शन स्टूडेंट्स की पढ़ाई के कामों पर ध्यान लगाने की क्षमता पर काफी असर डालते हैं। हालांकि, 30% लोग कम असर बताते हैं, जिससे पता चलता है कि कुछ स्टूडेंट्स में सेल्फ-रेगुलेशन अच्छा है। ये नतीजे पढ़ाई में होने वाले डिस्ट्रैक्शन को कम करने के लिए टाइम मैनेजमेंट और सोशल मीडिया के कंट्रोल वाले इस्तेमाल के बारे में जागरूकता की ज़रूरत पर ज़ोर देते हैं।

तालिका 7: एकेडमिक परफॉर्मेंस पर सोशल मीडिया का प्रभाव

राय	फ्रीक्वेंसी	प्रतिशत
पॉज़िटिव	46	23.0
नेगेटिव	84	42.0
कोई असर नहीं	70	35.0

तालिकासे पता चलता है कि 42% जवाब देने वालों का मानना है कि सोशल मीडिया उनके एकेडमिक परफॉर्मेंस पर नेगेटिव असर डालता है, जबकि 23% को पॉज़िटिव असर महसूस होता है। 35% लोगों का मानना है कि सोशल मीडिया का कोई खास असर नहीं होता है। यह मिला-जुला जवाब बताता है कि सोशल मीडिया का असर इस्तेमाल के तरीके पर निर्भर करता है। जो छात्र सोशल मीडिया का इस्तेमाल पढ़ाई के लिए करते हैं, उन्हें एकेडमिक तौर पर फायदा हो सकता है, जबकि बहुत ज़्यादा मनोरंजन के लिए इस्तेमाल करने से एकेडमिक नतीजे खराब हो सकते हैं।

तालिका 8: टाइम मैनेजमेंट और सोशल मीडिया के इस्तेमाल के बीच संबंध

जवाब	जवाब देने वाले	प्रतिशत
टाइम मैनेजमेंट पर असर पड़ता है	132	66.0
कोई असर नहीं पड़ता	68	34.0

तालिका 8 से पता चलता है कि 66% जवाब देने वालों का मानना है कि सोशल मीडिया उनके टाइम मैनेजमेंट पर असर डालता है, जिससे पढ़ाई का समय कम हो जाता है और काम टालने की आदत पड़ जाती है। इससे पता चलता है कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल स्टूडेंट्स की पढ़ाई के कामों को प्रभावी ढंग से प्लान करने और प्राथमिकता देने की क्षमता में रुकावट डालता है। खराब टाइम मैनेजमेंट सीधे तौर पर पढ़ाई के नतीजों पर असर डाल सकता है। ये नतीजे स्टूडेंट्स में सोशल मीडिया के इस्तेमाल और पढ़ाई की जिम्मेदारियों के बीच बैलेंस बनाने के लिए सेल्फ-डिसिप्लिन और टाइम-मैनेजमेंट स्किल्स डेवलप करने की अहमियत पर ज़ोर देते हैं।

तालिका 9: उत्तरदाताओं का शैक्षणिक प्रदर्शन स्तर

परफॉर्मेंस लेवल	फ्रीक्वेंसी	परसेंटेज
हाई	58	29.0
एवरेज	94	47.0
लो	48	24.0

तालिका 9 से पता चलता है कि लगभग आधे रिस्पॉन्डेंट (47%) एवरेज एकेडमिक परफॉर्मेंस कैटेगरी में आते हैं, जबकि 29% हाई परफॉर्मेंस दिखाते हैं और 24% लो परफॉर्मेंस दिखाते हैं। एवरेज परफॉर्मेंस वालों की ज़्यादा संख्या यह बताती है कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल कुछ हद तक एकेडमिक नतीजों पर असर डाल सकता है। यह समझने के लिए और एनालिसिस की ज़रूरत है कि सोशल मीडिया के इस्तेमाल के अलग-अलग पैटर्न स्टूडेंट्स के बीच एकेडमिक परफॉर्मेंस में बदलाव में कैसे योगदान देते हैं।

तालिका 10: सोशल मीडिया के इस्तेमाल और एकेडमिक परफॉर्मेंस के बीच संबंध

चर	सहसंबंध मान (r)
सोशल मीडिया का उपयोग और शैक्षणिक उपलब्धि	-0.42

तालिका 10 सोशल मीडिया के इस्तेमाल और एकेडमिक परफॉर्मेंस के बीच एक मॉडरेट नेगेटिव कोरिलेशन ($r = -0.42$) दिखाता है। इसका मतलब है कि जैसे-जैसे सोशल मीडिया का इस्तेमाल बढ़ता है, एकेडमिक परफॉर्मेंस कम होने लगती है। यह नेगेटिव रिश्ता स्टूडेंट्स की एकेडमिक परफॉर्मेंस पर बहुत ज़्यादा सोशल मीडिया इस्तेमाल के संभावित बुरे असर को दिखाता है। हालाँकि, कोरिलेशन का मतलब यह नहीं है कि एक चीज़ दूसरी चीज़ का कारण है, और सोशल मीडिया के इस्तेमाल का तरीका भी बहुत ज़रूरी भूमिका निभाता है। कंट्रोल और पढ़ाई से जुड़ा इस्तेमाल सीखने के नतीजों में मदद कर सकता है।

बहस

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष युवाओं के बीच सोशल मीडिया जुड़ाव और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच जटिल संबंधों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। उत्तरदाताओं के बीच सोशल मीडिया के उपयोग का उच्च स्तर संचार और मनोरंजन के लिए डिजिटल प्लेटफार्मों पर छात्रों की बढ़ती निर्भरता को दर्शाता है। यह निष्कर्ष पहले के अध्ययनों के अनुरूप है, जो बताता है कि स्मार्टफोन और इंटरनेट तक आसान पहुंच के कारण युवा सोशल नेटवर्किंग साइटों के सबसे सक्रिय उपयोगकर्ता हैं। छात्रों के बीच सोशल मीडिया के गैर-शैक्षणिक उपयोग की प्रबलता पिछले शोध के अनुरूप है जो मनोरंजन और सामाजिक संपर्क को सोशल मीडिया जुड़ाव के लिए प्राथमिक प्रेरणा के रूप में उजागर करता है। कारपिंस्की और डबरस्टीन और गुप्ता और बशीर द्वारा किए गए अध्ययनों ने इसी तरह बताया कि सोशल मीडिया के अत्यधिक मनोरंजक उपयोग से अक्सर शैक्षणिक विकर्षण होता है। शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए सोशल मीडिया का सीमित उपयोग एक शिक्षण उपकरण के रूप में इसकी क्षमता और छात्रों द्वारा इसके वास्तविक उपयोग के बीच एक अंतर का सुझाव देता है। इस अध्ययन में पहचाने गए एकाग्रता और समय प्रबंधन पर सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव जंको और पॉल एट अल के निष्कर्षों का समर्थन करता है, जिन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मल्टीटास्किंग और लंबे समय तक सोशल मीडिया व्यस्तता छात्रों के फोकस और अध्ययन दक्षता को कम करती है। सूचनाओं और ऑनलाइन इंटरैक्शन के कारण होने वाली लगातार रुकावटें छात्रों की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को बाधित करती हैं, जिससे गहन शिक्षण में संलग्न होना मुश्किल हो जाता है। यह बताता है कि छात्रों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सोशल मीडिया को शैक्षणिक सफलता में बाधा के रूप में क्यों देखता है। अध्ययन में देखा गया सोशल मीडिया के उपयोग और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच मध्यम नकारात्मक सहसंबंध इस तर्क को और मजबूत करता है कि अत्यधिक सोशल मीडिया सहभागिता शैक्षणिक परिणामों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। पिछले अनुभवजन्य अध्ययनों में इसी तरह के सहसंबंध बताए गए हैं, जो दर्शाता है कि सोशल मीडिया के उच्च स्तर का उपयोग निम्न ग्रेड और कम शैक्षणिक व्यस्तता से जुड़ा है। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सहसंबंध का अर्थ कार्य-कारण नहीं है, और व्यक्तिगत आत्म-नियमन और सीखने की प्रेरणा जैसे अन्य कारक भी शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं। साथ ही, अध्ययन उद्देश्यपूर्ण तरीके से उपयोग किए जाने पर सोशल मीडिया की सकारात्मक शैक्षणिक भूमिका को स्वीकार करता है। जो छात्र अकादमिक सहयोग, चर्चा समूहों और शैक्षिक सामग्री उपभोग में संलग्न हैं, उन्हें सीखने के बेहतर अवसरों से लाभ हो सकता है। इस खोज को टेस और अल-रहमी और ओथमान द्वारा समर्थित किया गया है, जिन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं में सोशल मीडिया के संरचित एकीकरण से छात्र जुड़ाव और प्रदर्शन में सुधार हो सकता है। चर्चा युवाओं के बीच सोशल मीडिया के उपयोग के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है। सोशल मीडिया के उपयोग को पूरी तरह से हतोत्साहित करने के बजाय, शिक्षकों और नीति निर्माताओं को डिजिटल साक्षरता, जिम्मेदार उपयोग और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के शैक्षणिक एकीकरण को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह तरीका स्टूडेंट्स को सोशल मीडिया के फायदों का इस्तेमाल करने में मदद कर सकता है, साथ ही पढ़ाई पर इसके नेगेटिव असर को भी कम कर सकता है।

निष्कर्ष

इस स्टडी में युवाओं पर सोशल मीडिया के इस्तेमाल के एकेडमिक परफॉर्मेंस पर पड़ने वाले असर की जांच की गई और स्टूडेंट्स के डिजिटल व्यवहार और सीखने के नतीजों के बारे में ज़रूरी बातें सामने आईं। सोशल मीडिया युवाओं की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा बन गया है, जो शिक्षा के क्षेत्र में मौके और चुनौतियाँ दोनों देता है। स्टडी

के नतीजों से पता चलता है कि जहाँ सोशल मीडिया बातचीत, सहयोग और जानकारी तक पहुँचने के लिए प्लेटफॉर्म देता है, वहीं इसका ज़्यादा और गैर-एकेडमिक इस्तेमाल स्टूडेंट्स के एकेडमिक परफॉर्मेंस पर बुरा असर डालता है। स्टडी का निष्कर्ष है कि ज़्यादातर स्टूडेंट्स एकेडमिक कामों के बजाय मनोरंजन और सोशल इंटरैक्शन के लिए सोशल मीडिया पर काफी समय बिताते हैं। इस्तेमाल का यह तरीका अक्सर खराब टाइम मैनेजमेंट, कम एकाग्रता और पढ़ाई में ध्यान भटकने का कारण बनता है। सोशल मीडिया के इस्तेमाल और एकेडमिक परफॉर्मेंस के बीच देखे गए नेगेटिव संबंध से स्टूडेंट्स की ऑनलाइन गतिविधियों में संयम और सेल्फ-रेगुलेशन की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया है। स्टडी यह भी मानती है कि जब सोशल मीडिया का इस्तेमाल मकसद के साथ और सही तरीके से किया जाता है, तो यह एकेडमिक परफॉर्मेंस में पॉजिटिव योगदान दे सकता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के ज़रिए एकेडमिक चर्चा, साधियों के साथ सहयोग और एजुकेशनल कंटेंट तक पहुँच सीखने के अनुभव और एकेडमिक जुड़ाव को बढ़ा सकती है। इसलिए, एकेडमिक परफॉर्मेंस पर सोशल media का असर काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि इसका इस्तेमाल कैसे और क्यों किया जाता है।

संदर्भ

1. अहमद, I., और काज़ी, T. F. (2019). सोशल मीडिया और एकेडमिक परफॉर्मेंस। एजुकेशन एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजीज।
2. अहमद, I., और काज़ी, T. F. (2019). एजुकेशन एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजीज।
3. चुघ, R., और रूही, U. (2018). जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी सिस्टम्स।
4. गुप्ता, S., और बशीर, L. (2018). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल मैनेजमेंट।
5. खान, M., अशरफ, N., और मलिक, A. (2022). कंप्यूटर्स एंड एजुकेशन।
6. मोकबेल, M., और कॉक, N. (2020). इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड पीपल।
7. ओवुसु-अचेव, M., और लार्सन, A. G. (2019). लाइब्रेरी फिलॉसफी एंड प्रैक्टिस।
8. सिंह, S., और गिल, M. S. (2021). जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड इंफॉर्मेशन स्टडीज़।
9. अल-रहमी, W. M., और ओथमान, M. S. (2013). सोशल मीडिया का उपयोग और एकेडमिक परफॉर्मेंस। कंप्यूटर्स एंड एजुकेशन, 62, 296–307।
10. बॉयड, D. (2014). इट्स कॉम्प्लिकेटेड: द सोशल लाइव्स ऑफ़ नेटवर्क टीन्स। येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. चुघ, R., और रूही, U. (2018). उच्च शिक्षा में सोशल मीडिया। जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी सिस्टम्स।
12. गुप्ता, S., और बशीर, L. (2018). सोशल नेटवर्किंग का उपयोग और एकेडमिक परफॉर्मेंस। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल मैनेजमेंट।
13. जुनको, R. (2012). सोशल मीडिया मल्टीटास्किंग और एकेडमिक परफॉर्मेंस। कंप्यूटर्स एंड एजुकेशन, 58(1), 162–171।
14. कार्पिंस्की, A. C., और डुबरस्टीन, A. (2009). फेसबुक का उपयोग और एकेडमिक परफॉर्मेंस। जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी।
15. किर्शनेर, P. A., और कार्पिंस्की, A. C. (2010). फेसबुक और एकेडमिक परफॉर्मेंस। कंप्यूटर्स इन ह्यूमन बिहेवियर, 26(6), 1237–1245।
16. लाउ, W. W. F. (2017). सोशल मीडिया के उपयोग के प्रभाव। शैक्षिक मनोविज्ञान।
17. लेनहार्ट, ए. (2015). किशोर, सोशल मीडिया, और प्रौद्योगिकी। प्यू रिसर्च सेंटर।

18. लिविंगस्टोन, एस. (2014). सोशल मीडिया साक्षरता का विकास। मीडिया, संस्कृति और समाज।
19. मोकबेल, एम., और कॉक, एन. (2020). सोशल मीडिया थकान। सूचना प्रौद्योगिकी और लोग।
20. ओवुसु-अचेव, एम., और लार्सन, ए. जी. (2019). सोशल मीडिया और छात्र प्रदर्शन। पुस्तकालय दर्शन और अभ्यास।
21. पॉल, जे. ए., बेकर, एच. एम., और कोचरेन, जे. डी. (2012). ऑनलाइन सोशल नेटवर्किंग प्रभाव। जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल कंप्यूटिंग रिसर्च।
22. रोसेन, एल. डी. (2012). iDisorder और शैक्षणिक परिणाम। पालग्रेव मैकमिलन।
23. सेल्विन, एन. (2016). शिक्षा और प्रौद्योगिकी। ब्लूम्सबरी।
24. सिंह, एस., और गिल, एम. एस. (2021). सोशल मीडिया और युवा शिक्षा। जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड इंफॉर्मेशन स्टडीज़।
25. स्टैटिस्टा। (2023). सोशल मीडिया उपयोग के आँकड़े।
26. सुब्रह्मण्यम, के., और स्माहेल, डी. (2011). डिजिटल युवा। स्प्रिंगर।
27. टेस, पी. ए. (2013). उच्च शिक्षा में सोशल मीडिया की भूमिका। मानव व्यवहार में कंप्यूटर।
28. यूनेस्को। (2021). डिजिटल शिक्षा और युवा।
29. वांग, क्यू., चेन, डब्ल्यू., और लियांग, वाई. (2011). सोशल मीडिया और शैक्षणिक प्रदर्शन। कंप्यूटर और शिक्षा।
30. वेंटवर्थ, डी. के., और मिडलटन, जे. एच. (2014). प्रौद्योगिकी उपयोग और GPA। जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी।
31. जू, एक्स. (2020). सोशल मीडिया की लत और सीखना। शैक्षिक अनुसंधान समीक्षा।
32. झाओ, एस., ग्रासमक, एस., और मार्टिन, जे. (2008). सोशल मीडिया पर पहचान निर्माण। मानव व्यवहार में कंप्यूटर।